केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल 32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	(अं	प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	क (अंकों
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13					
14					
15					
16					

CHITRA SHRIVASTAVA
V.No.1408

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
L.R.PAL V.No.2104	RACHNA SAXENA V.No. 2353

3

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 3 के अंक | कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० ⇒ 1

(i) भी ।

(ii) 1556 ।

(iii) दो ।

(iv) अप्रतिकार ।

(v) भगत जी ।

(vi) मराठी ।

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र0⇒ 2

(i) जैनेन्द्र कुमार ।

(ii) तीन ।

(iii) पाठशाला ।

(iv) वेब दुनिया ।

(v) क्षार ।

(vi) व्यतिरेक ।

(5)

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० ⇒ 3

(i) सत्य ।

(ii) सत्य ।

(iii) सत्य ।

(iv) सत्य ।

(v) असत्य ।

(vi) असत्य ।

6

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० ⇒ 4

(i) कथानक – कहानी

(ii) संस्कृत के मूल शब्द – तत्सम

(iii) यशोधर बाबू – सिल्वर वैडिंग

B
S (iv) अंतरंग साक्षात्कार – डायरी

E (v) हरिवंशराय बच्चन – हालावाद

(vi) प्रगतिवाद – 1936

(vii) यशोधरा – खण्डकाव्य

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र○ → 5

(i) सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा नगर मुअनजो-दड़ो था।

(ii) आमतौर पर रेडियो नाटक की अवधि 15 मिनट से 30 मिनट तक की होती है।

(iii) सूरज का सातवां घोड़ा धर्मवीर भारती की रचना है।

(iv) शांत रस का स्थाई भाव शम या निर्वेद है।

(v) आलोक धन्वा का एकमात्र काव्य संग्रह 'दुनिया रोज बनती है' है।

पहलवान लुट्टन सिंह के दो पुत्र थे।

(vii) 'बाल बाल बचना' मुहावरे का अर्थ 'निकटवर्ती गंभीर संकट से बचना है।'

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL
BSE

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० → 23

उत्तर :-

-: प्रदूषण का बढ़ता प्रभाव :-

रूपरेखा :-
1. प्रस्तावना
2. प्रदूषण के स्रोत
3. प्रदूषण के हानिकारक प्रभाव
4. प्रदूषण का मानवों पर प्रभाव
5. प्रदूषण को रोकने के उपाय
6. उपसंहार

" आज के समय में प्रदूषण, संस्कृति का सबसे बड़ा शत्रु है । "

(1) **प्रस्तावना** :- आज वर्तमान युग में विज्ञान के बढ़ने के साथ ही प्रदूषण भी चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया है । प्रदूषण के कारण मानव को ही नहीं अपितु संपूर्ण प्रकृति को भी खतरे का सामना करना

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

पूड़ रहा है, प्रदूषण मानवीय क्रियाकलापो के कारण ही फैल रहा है जो आज संपूर्ण पृथ्वी को अपनी चपेट मे ले रहा है।

2. प्रदूषण के स्रोत :- आज के प्रगतिशील युग में प्रदूषण के बढ़ने के मुख्य स्रोत विज्ञान द्वारा विकसित यंत्र-तंत्रो का अनियंत्रित व असुलभता से प्रयोग करना है। बड़े-बड़े फैक्टरी, कारखानों, उद्योगो आदि से अनेक प्रकार की दूषित सामग्री प्राप्त होती है जो बिना परवाह के नदी, तालाब या खुले मे ही फेंक दी जाती है जिस कारण से प्रदूषण का विस्तार हो रहा है जो मानव जाति के लिए खतरा है।

3. प्रदूषण के हानिकारक प्रभाव :- प्रदूषण का पर्याय ही हानि होता है। यह पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुँचा रहा है। पृथ्वी आज पूर्णतः प्रदूषण की चपेट में है। आज पीने के लिए स्वच्छ जल नहीं, हवा भी दूषित है और जहरीले भोज्य पदार्थों की तादाद भी दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। प्रदूषण के कारण मानव ही नहीं अपितु पशु-पक्षी और संपूर्ण पृथ्वी के जीवो को विकट समस्या का

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

सामना करना पड़ रहा है।

4. प्रदूषण का मानवों पर प्रभाव :- चूंकि प्रदूषण मानव के द्वारा ही अपनी अनियंत्रित क्रियाकलापो के कारण उत्पन्न होता है, मानव निज स्वार्थ के कारण वृक्षो को काट रहा है जिससे प्रदूषण का प्रभाव दिन दोगुना रात चौगुना विस्तृत हो रहा है। मानव को प्रदूषण के कारण अनेक बीमारियो का सामना करना पड़ रहा है। वायु, ध्वनि, जल, थल के प्रदूषित हो जाने के कारण मानव की विनाश की घड़ी क्षण-प्रतिक्षण निकट आती जा रही है।

5. प्रदूषण को रोकने के उपाय :- चूंकि पृथ्वी के विकास के लिए उद्योगो, कारखानो आदि को बंद नही किया जा सकता परंतु उन सब की क्रियाओ को नियंत्रित कर प्राप्त अपशिष्ट पदार्थ का सुविधा से प्रयोग किया जा सकता है। वृक्षो को अधिक से अधिक लगाया जाना चाहिए तथा सरकार के द्वारा भी प्रदूषण के रोकथाम के लिए कुछ योजनाएं संचालित की जानी चाहिए।
सरकार द्वारा पहले से ही स्वच्छ भारत जैसी

B S E

11

प्रश्न क्र.

कई योजनाएँ चलाई गई है पर इन्हे सशक्त तरीके से क्रियान्वित किया जाना जरूरी है।

6. उपसंहार :- प्रदूषण आज के युग मे विकट समस्या है परंतु इसे नियंत्रित किया जा सकता है। हम प्लास्टिक व पॉलीथिन के लिए 5-R जैसी क्रियाओ का प्रयोग करके प्रदूषण को जड़ से खत्म कर सकते है। सरकार ही नहीं हमारा भी कर्तव्य बनता है कि हम प्रदूषण को रोकने के लिए उत्तरदायी पथ पर चलें। हम पृथ्वी को स्वच्छ बनाकर ही मानव जाति को सुरक्षित कर सकते है।

"बिन स्वच्छता सब सून।"

B
S 4
F

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० ⇒ 22

उत्तर:- सेवा मे
श्रीमान निगमायुक्त महोदय
नगर निगम, छतरपुर (म.प्र.)

विषय :- नियमित जल आपूर्ति करवाने हेतु आवेदन पत्र।

महोदय,
सविनय निवेदन है कि मैं नगर छतरपुर का निवासी हूँ। हमारे क्षेत्र छत्रसाल कॉलोनी वार्ड क्र० 01 मे नियमित रूप से जल की आपूर्ति नहीं हो रही है। जून की इन कठिन गर्मियो के दिनो मे नियमित जल आपूर्ति न हो पाने के कारण हमारे नियमित दैनिक कार्यो मे बाधा उत्पन्न हो रही है। सामूहिक जल नियोजन सुविधा के स्थान पर बहुत भीड़ व बड़ी-बड़ी पंक्तियाँ लगी होती है जो समय को बर्बाद करती है।
अतः महोदय जी से निवेदन है कि ~~जल्दी~~ जल्दी से जल्दी नियमित जल की आपूर्ति करवाने की व्यवस्था करे। मै आपका आभारी रहूँगा।
धन्यवाद

BSE

आपका शुभचिंतक
अंकित
दिनांक – 02/06/2024

प्रश्न क्र० ⇒ 21

उत्तर:- संकेत :– यह शिरीष – – – – मस्त रहते हैं।

संदर्भ:– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक आरोह-II के 'शिरीष के फूल' नामक पाठ से संदर्भित है जिसके लेखक 'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी' है।

प्रसंग:– प्रस्तुत गद्यांश मे लेखक ने शिरीष के सदैव एकसमान व्यवहार का वर्णन किया है।

व्याख्या:– प्रस्तुत गद्यांश में द्विवेदी जी कहते है कि शिरीष का वृक्ष एक अवधूत सन्यासी है अर्थात लेखक को शिरीष का वृक्ष विस्मय प्रकृति का लगता है। यह दुख हो या सुख हार नही मानता अर्थात

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

अर्थात गर्मी हो, लू हो, यह जीने की इच्छा नही छोड़ता है। न ऊधो का लेना न माधो का देना का अर्थ है कि यह सदैव समान स्वभाव मे खड़ा रहता है। क लेखक कहता है कि जब बहुत गर्मी पड़ती है और धरती व आकाश जलने लगते है अर्थात बहुत अधिक अधिक गर्मी पड़ती है तो ये वृक्ष वातावरण से ही नमीव रस को खीचकर जीवन की इच्छा को जीवित रखता है। शिरीष का फूल सदैव मस्ती मे रहता है और आठो पहर मुस्कुराता है।

विशेष :- ① समुचित मुहावरे का प्रयोग
(न ऊधो का लेना, न माधो का देना)

② विशिष्ट अर्थक सह शब्दो का प्रयोग
(हजरत – श्रीमान)

B S E

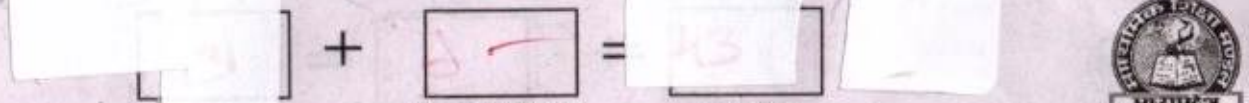

(15) + =
यो. पृ. पृष्ठ 15 के अंक कुल अंक

प्रश्न क्र.

B
S
E

प्रश्न क्र० => 20

उत्तर- संकेत :- किसबी किसान _ _ _ _ आगि पेट की।

संदर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक आरोह-II के 'कवितावली' नामक पाठ से संदर्भित है जिसके रचयिता 'गोस्वामी तुलसीदास जी' है।

प्रसंग :- प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने समाज मे व्याप्त पेट की आग को बुझाने के लिए किए गये कर्मो बेरोजगारी को इंगित किया है।

व्याख्या :- प्रस्तुत पद्यांश मे गोस्वामी जी कहते है कि धंधा करने वाले, किसान, वनिया, भिखारी, प्रशासक, नौकर, नट, चोर, बाजीगर आदि सभी पेट की आग को बुझाने के लिए कार्य करते है। कवि कहते है कि पेट की आग को बुझाने के लिए मनुष्य पर्वतो पर चढ़ता है तथा घने जंगलो मे शिकार भी करता है यहाँ तक कि पेट की आग को शांत करने के लिए लोग ऊँचे नीचे कर्म व धर्म - अधर्म के कार्य भी करते है इससे भी बढ़कर वे अपने पेट को पालने के लिए अपने

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

बेटा-बेटी तक को बेच देते है। तुलसी दास जी कहते है कि यह पेट की आग समुद्र की आग से भी बढ़कर होती है और इसका शमन केवल प्रभु श्रीराम जी ही कर सकते है, अर्थात पेट की आग राम ही बुझाते है।

विशेष :- ① वार्णिक छंद (कवित्त)
② गेयता।
③ विशिष्ट अर्थक शब्द।

प्रश्न क्र० ⇒ 19 (अथवा)

उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक शौर्य भाव और देशप्रेम है।

(i) राष्ट्रीय भावना में शौर्यभाव का अपना विशिष्ट स्थान है।

(ii) अधिक बड़ा या विस्तृत

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रं⇒ 18

उत्तर:- -|- फिराक गोरखपुरी -|-

(i) दो रचनाएँ :- ① गुले नग्मा
② रंगे शायरी

(ii) भावपक्ष :- इन्होंनें अपने काव्य मे रोमांचित भावो को अंतर्निष्ठ किया है। इन्होने बालसुलभ, प्रेमी, और वात्सल्य भावनाओ को अपने काव्य मे संजोया है।

कलापक्ष :- आपने अपने काव्य कृतियो मे उर्दू व फारसी के शब्दो का प्रयोग किया जो जिनका एक विशिष्ट अर्थ होता है। आपने छंदो मे से रुबाईयों व गजल का अधिक प्रयोग किया।

साहित्य मे स्थान :- गजल के निर्माण व शायरो मे मीर व गालिब के पश्चात आपका ही नाम प्रदर्शित होता है। आपको गुले नग्मा के कारण साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित

किया है। आपके बिना हिंदी साहित्य अधूरा है।

प्रश्न क्र० ⇒ 17

उत्तर :- "मन के हारे हार है मन के जीते जीत,"

भाव विस्तार :- यह उक्ति सर्वथा उचित है, हमारी सभी शारीरिक क्रियाओ के मेल मन से होता है। मन मे यदि किसी कार्य को करने का उत्साह है तो शारीरिक क्रियाओ की गति दोगुनी हो जाती है और यदि मन मे किसी कार्य के प्रति नकार है तो कार्य करने की शक्ति आधी ही रह जाती है। मन शरीर की क्रियाओ का बांधे रहता है। यदि आप किसी कार्य को करने से पूर्व हार मान लेते है तो आप ~~निश्चय~~ निश्चय ही हार जायेंगे।

मेरे हिसाब मे बाली का उदाहरण इसमे सर्वोत्तम है मेरे हिसाब से बाली मे कोई भी दैवीय शक्ति नही थी उसके मन मे आत्मबल के कारण ही ~~वह~~ वह सामने वाले को आसानी से ही परास्त कर देता था। मन को दृढ़ व

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न

नियंत्रित कर लेने पर मनुष्य कोई भी कार्य कर सकता है अतः किसी कार्य को करने से पूर्व मन मे उत्साह व आत्म-विश्वास होना चाहिए आप निश्चय ही सफल होंगे।

—: "हारा वही जो लड़ा नहीं।" :—

प्रश्न क्र०⇒16

उत्तर:- —।महादेवी वर्मा।—

(i) दो रचनाएँ :— ① अतीत के चलचित्र
② यामा

(ii) भाषा :— आपने अपनी रचनाओं मे अनेक प्रकार के तत्सम, तद्भव, मुहावरो, लोकोक्ति का प्रयोग किया है। आपने अपने रचनाओ मे सरल व सुबोध भाषा का प्रयोग किया।

शैली :— आपकी रचनाएँ व्याख्यात्मक, वर्णनात्मक, भावात्मक व विचारात्मक शैली से परिपूर्ण रही।

(20)

प्रश्न क्र.

(iii) साहित्य मे स्थान :- साहित्य मे आपका स्थान अद्वितीय रहा है। इन्होंने साहित्य मे अनेक रचनाएँ जोड़ी है इस कारण इन्हें 'आधुनिक युग की मीरा' कहा जाता है। आप छायावाद के चार स्तंभो मे से एक थी।

B

प्रश्न क्र० ⇒ 15 (अथवा)

S

उत्तर:- वीर रस:-

E

वीर रस :- सहृदय के हृय हृदय मे स्थित 'उत्साह' नामक स्थायी भाव का जब अनुभव, विभाव और संचारी भाव से संयोग होता है तो वहाँ वीर रस होता है।

उदा० :- वह खून कहो किस मतलब का जिसमे उबाल का नाम नहीं।
वह खून कहो किस मतलब का जो आ सके देश के काम नहीं।
वह खून कहो किस मतलब का जिसमे जीवन न रवानी है,

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

"जो परवश होकर बहता है वह खून नहीं है पानी है।।

प्रश्न क्र.⇒ 14

उत्तर:-

महाकाव्य	रचनाकार
रामचरितमानस	गोस्वामी तुलसीदास
कामायनी	जयशंकर प्रसाद

प्रश्न क्र.⇒ ~~13~~ 13

उत्तर:-

छायावाद :- "जब आत्मा की छाया परमात्मा पर और परामात्मा की छाया आत्मा पर पड़ती है तो इस स्थिति को छायावाद कहते है।"

'स्थूल के प्रति सूक्ष्म के विद्रोह को छायावाद कहते है।'
:- डॉ नगेन्द्र

EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

विशेषताएँ :- ① प्रकृति का मानवीकरण

② मुक्तक छंद का प्रयोग शुरु और व्यक्तिवाद की प्रधानता।

प्रश्न क्र० ⇒ 12

:- बच्चे इस आशा में नीड़ों से झांक रहे होंगे की सुबह शाम के समय उनके माता-पिता आयेंगे और उन्हें पर भरपूर भोजन प्रदान कर स्नेह का स्पर्श भी देंगे।

प्रश्न क्र० ⇒ ~~12~~ 11 (अथवा)

उत्तर:-

मुद्रित माध्यम के लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें निम्न हैं:-

1. भाषा अत्यंत सरल, सुबोध व पठनीय हो ताकि पाठक आसानी से उसका पालन कर सके।

प्रश्न क्र.

भाषा मे किसी भी प्रकार की अशुद्धि न हो, वर्तनी शुद्ध होनी चाहिए।

प्रश्न क्र० ⇒ 10

उत्तर:- मुअनजो-दड़ो की नगर नियोजन की दो विशेषताएँ निम्न है:-

BSE

(1) नगर की सड़के एक-दूसरे को परस्पर लंबवत् काटती थी और ~~नगर~~ सड़क के दोनों ओर घर बने हुए थे।

(2) ~~नव~~ सड़क के दोनो ओर नालियाँ होती थी जो पक्की ईंटो से बनी होती थी और सदैव ढकी रहती थी ताकि नाली का पानी बाहर न फैले।

प्रश्न क्र० ⇒ 9 (अथवा)

(i) बालक रो-रो कर चुप हो गया। (संयुक्त)
बालक रोया और चुप हो गया।

(ii) मयूर ~~बन~~ वन मे नाचता है। (संदेहवाचक)
= शायद मयूर ~~बन~~ वन मे था नाचता है।

माध्यमिक शिक्षा मंडल मध्यप्रदेश
EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० ⇒ 8 (अथवा)

उत्तर:- राष्ट्रभाषा की विशेषताएं निम्न है :-

① यह संविधान द्वारा चयनित कि की जाती है और
② यह संपूर्ण राष्ट्र की भाषा होती है।
③ यह संपर्क भाषा भी होती है।

प्रश्न क्र० ⇒ 7

उत्तर:-

कहानी	उपन्यास
① इसका आकार लघु होता है।	① इसका आकार दीर्घ होता है।
② इसमे पात्रो की संख्या कम होती है।	② इसमे पात्रो की संख्या अधिक होती है।
पूस की रात - प्रेमचंद	उदा. :- गोदान - प्रेमचंद

25

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० ⇒ 6

उत्तर:- भक्तिन के आज जाने पर महादेवी वर्मा अधिक देहाती हो गयी क्योंकि भक्तिन उन्हें अपनी इच्छा का मनपसन्द भोजन खिलाती थी। रात को बना दलिया, सुबह मठ्ठे के साथ खाना, बाजरे के भुने दानो के पुए, सफेद मक्का की लपसी आदि जैसी चीजे खिलाकर भक्तिन महादेवी को अधिक देहाती बना दिया।

B
S
E